

आशा सरकथि

2552

ASHA ARCHIVES



४५

२॥

वसकयूजावन॥ नाटश्च वसक द्याद्यवसिद्धिया (थं) मालकवाय मालयनि लंदयाहा द
थूसवाय ॥ ॥ मूअद्यादि यजमानानी कृममूकनामनाटकस्य मूलसिद्धि नाटश्च
नाट्टनकर्तुं श्रीसूर्याय नमः ४ पूर्यनमः ॥ धनसूर्याद्यवाक्य ॥ द्याद्यवसिद्धिया (थं) पूज
याय ॥ ॥ मालयनियूजा ॥ रुडययस (ग) वावननवाय नाटश्च यामूलमंगु पाखनमा
या यणु या नामसजा वलय वरु १ सिद्धि १ दू नमः ॥ प्रयवका यलका धिर्यगु मरयूष्य मू
कृम रुयखान धनमंगुडानाय रलियनिसदूथान ॥ यूजा नाटश्च मूलमनुन वरुडन ॥ ॥

२

वंगयाहायूजा ॥ ॐ हूं दुर्देवकानृश्वनाय (धनवंग) यनमः ॥ ॐ हूं मत्पुत्राय नृश्व
नायपीन वंगयनमः ॥ ॐ हूं मूद्यावनृश्वनाय कृष्ण वंगयनमः ॥ ॐ हूं सयाजाननृ
श्वनाय स्याम वंगयनमः ॥ ॐ हूं वामदेवनृश्वनाय वरु वंगयनमः ॥ धननवः
निः ॥ मूवाहनादिर्वदना कृमयूष्यनमः ॥ ॥ मुनिमायाड (थं) हू धया (थ) ॥ ॥ धन
लि यल्लु सयूजाया गवन ॥ वायाकाथ यनवासन यद्रवाय धयादवन मावगयाव
वक्रगय ॥ धयादवन मावगयाव वीवक लजगय ॥ धयाडवस् गै कामयाड कलजग

५१

वा का
 य॥ खवस गीकि वीज कलश मय॥ द्रवत वा रुव कलश मय॥ वलिया मस ३ वाय॥ नूय
 याग वाय॥ धया ऊवस गाहा लय कलश मय॥ धया ऊवस भारुनी याग॥ ॥ कपू ३
 कूक म् (ग) या वन धी ख गु क मु वि सूत्रा धन नया क्वा दा व रु मिल यन याय ॥ ॥ धन
 लि यन वासन विकान षट्का न मूषय गु गिरु न ख गु व अ व गु द वा वाय ॥ ॥ गिका ३
 नाम धूस दीय याग मय॥ ॥ यूसास गिका न मूष दल वडु लं वाय गिका न या द धूस
 वे की सी वाय॥ ऊवस ०० क्वा गीकि॥ खवस क्कान गीकि॥ मूयस क्रिया गीकि॥ वकन यूव
 ३२

वा
 वृत्तिके लादि॥ यज्ञ लग्न २।१।८॥ धन लग्न सून या न सा आगा श न सा वाय म ला द गिर्य म
 रु धम न व धानि ला ध कं ध न सा न व धान म रु सम रु ध धा ॥ ॥ न लि प नी न ला दि॥ यज्ञ लग्न
 ॥ ७।१॥ ० धन वल नै न स य म या न सा स्ति न या वि प नि न रु ल नै द या द न सा म नी द धा य
 ॥ ८॥ द्वि स्र ला व लग्न ३।१।१॥ धन यज्ञ लग्न श न मि ध रु ला ॥ ना क्का ल लग्न ला द म य श ना
 ॥ गुरु गुरु न र्व न सा गुरु रु ला ॥ पा प गुरु न र्व न सा गुरु रु ला ॥ न ना गुरु न र्व न मि ध रु

ला॥वि॥ष॥मा॥वल॥वक॥श॥ना॥आ॥या॥रु॥ल॥स॥ये॥॥॥ ॥लग्न॥आ॥दि॥व॥न्द॥लग्न॥स॥श॥यि॥व॥गु॥रु॥य॥
 रु॥न॥रु॥ल॥शु॥रु॥ल॥॥पा॥प॥न॥रु॥ल॥जु॥रु॥ल॥॥की॥न॥व॥न्द॥रु॥ल॥म॥ध॥रु॥ल॥॥गु॥रु॥न॥पा॥प॥न॥
 र्वा॥न॥सा॥म॥रि॥रु॥ल॥॥॥॥॥सु॥न॥ग॥रु॥ग॥रु॥या॥दि॥॥सु॥न॥य॥त्र॥म॥मै॥ग॥रु॥ष॥रु॥म॥ध॥न॥रि॥ध॥य॥स॥पा॥प॥
 य॥रु॥रु॥रु॥वा॥न॥सा॥म॥न॥सा॥ल॥न॥लि॥रु॥व॥स॥ये॥॥॥॥ ॥म॥षा॥लि॥क॥रु॥क॥रु॥रु॥या॥दि॥॥म॥ष॥मी॥न॥
 ज॥लि॥वि॥रु॥क॥रु॥क॥रु॥रु॥य॥सि॥द्धि॥न॥सा॥न॥ल॥ध॥य॥पु॥न॥या॥क॥न॥व॥रु॥ध॥स॥ध॥ना॥नि॥रु॥ल॥सा॥नि॥य॥स॥रु॥

लग्ना

वि॥र्ग॥य॥ती॥रु॥द॥॥धी॥मा॥रु॥का॥स॥न॥स्व॥मी॥ध॥व॥मा॥रु॥ला॥वी॥जा॥नि॥स्व॥वा॥॥ग॥क॥य॥॥धी॥वि॥शा॥रु॥ल॥न॥
 लि॥खि॥न्ना॥भु॥वि॥नि॥या॥ग॥॥॥॥म॥वि॥दु॥न्द॥न्या॥स॥॥॥मू॥ल॥ल॥ना॥॥मू॥म॥ख॥॥॥द॥रु॥न॥ध॥॥॥
 वा॥म॥न॥य॥॥॥द॥रु॥क॥रु॥॥॥दु॥वा॥म॥क॥रु॥॥॥म॥द॥रु॥ना॥सा॥यु॥ट॥॥म॥वा॥म॥ना॥ग॥पु॥ट॥॥॥द॥रु॥ग॥रु॥॥॥
 वा॥म॥ग॥रु॥॥॥दु॥रु॥द॥रु॥॥॥मू॥ध॥य॥॥॥दु॥रु॥द॥रु॥॥॥मू॥ध॥य॥॥॥मू॥धि॥का॥॥मू॥ग॥लु॥॥क॥द॥रु॥
 रू॥ध॥॥॥द॥रु॥कू॥रु॥य॥॥॥ग॥द॥रु॥म॥नि॥रु॥ध॥॥॥द॥रु॥मू॥गु॥लि॥॥॥द॥रु॥न॥ख॥॥॥वा॥म॥रु॥ध॥॥॥दु॥वा॥म॥
 कू॥रु॥य॥॥॥वा॥म॥म॥नि॥रु॥ध॥॥॥म॥वा॥म॥मू॥गु॥लि॥॥॥वा॥म॥न॥ख॥॥॥द॥रु॥क॥रु॥॥॥द॥रु॥क॥रु॥॥॥द॥रु॥गु॥

का॥ नमः॥ गगनाथाय नमः॥ गान्॥ कं॥ अन्धाय नमः॥ दक्षसु॥ खं॥ सूर्यकर्मय नमः॥ कू
 र्य॥ गं॥ शिलाय नमः॥ मनिव॥ धं॥ लीलाय नमः॥ श्रीगुलमू॥ दं॥ मरुतनाय नमः
 ॥ नख॥ चं॥ मुमुक्षुय नमः॥ वामसु॥ धं॥ सदानिवाय नमः॥ कूर्य॥ कं॥ मायाय नमः॥
 मनिव॥ धं॥ मंदूमाय नमः॥ मू॥ गुलि॥ अं॥ सुमूखाय नमः॥ नख॥ दं॥ यमायाय नमः॥ दक्ष
 कटि॥ ०॥ कयायाय नमः॥ जन्॥ उं॥ द्विजिदाय नमः॥ गुलू॥ दं॥ गूलाय नमः॥ यादायुलि
 ॥ लं॥ वीत्राय नमः॥ नख॥ नं॥ वमूखाय नमः॥ वामकटि॥ धं॥ वत्रदाय नमः॥ म॥ ४॥ जानू॥ दं

वामदवाय नमः॥ गुलू॥ धं॥ वकुर्दाय नमः॥ यादायुलि॥ नं॥ द्विप्रअय नमः॥ नख॥ यं॥ स
 नान्येनमः॥ दक्षया॥ र्वं॥ रं॥ ग्रामयेनमः॥ वामय॥ वं॥ मरुतनाय नमः॥ य॥ र्वं॥ रं॥ विमरुतनाय
 नमः॥ गुलू॥ मं॥ मरुतनाय नमः॥ नारु॥ यं॥ उटिननमः॥ ली॥ गं॥ वं॥ मूढिननमः॥ नारु॥
 लं॥ खडिननमः॥ उद॥ वं॥ वत्रदाय नमः॥ ददि॥ गं॥ वत्रकननाय नमः॥ क॥ र्वं॥ वं॥ रुद्राय
 याय नमः॥ गालू॥ सं॥ ग॥ ल॥ यनमः॥ ललाट॥ रं॥ म॥ यनायाय नमः॥ जि॥ वं॥ लं॥ या॥ वि॥ ल॥ नमः॥
 मरुकादि॥ कं॥ ग॥ ल॥ यत्राय नमः॥ यादादिमरु॥ रं॥ नि॥ ग॥ ल॥ यत्राय नमः॥ ॥ य॥ रु॥ न्या॥ स॥ नं॥

ॐ १७ सूर्याय नमः ॥ हृदि ॥ यंत्रं लं वं सामाय नमः ॥ शिब ॥ कं ७ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमः ॥
वं ७ शुक्राय नमः ॥ वक्रसि ॥ टं ७ वृधाय नमः ॥ गदूर्ध्व ॥ नं ७ वृहस्पतये नमः ॥ क ७ ॥

[illegible]

ध्यायनमः॥ क० ॥ स्वर्गं नृ० ध्यायनमः॥ दक्षिणं॥ द्यौर्दमद्या० ध्यानमः॥ दक्षमद्यायनमः॥
 वामा०॥ वैयूवरुद्रा० ध्यानमः॥ दक्षकूर्या०॥ म० रुद्रा० ध्यानमः॥ दक्षमनिर्व०॥ द० शिः
 गायनमः॥ वाममनिर्व०॥ उ० स्वा० ध्यानमः॥ दक्षरुद्रा०॥ द० शिः० ध्यायनमः॥ वमरुद्रा०॥ न० ध्याः
 नृ० नृ० ध्यायनमः॥ ना०॥ द० ध्या० ध्यायनमः॥ दक्षमूल०॥ न० ध्या० मूल० ध्यायनमः॥ वामा० मूल०
 ॥ वैयूव्या० ध्यायनमः॥ दक्षड०॥ रु० रुद्रा० ध्यायनमः॥ वामड०॥ म० ध्या० ध्यायनमः॥ दक्ष
 जानो॥ य० ध्या० ध्यायनमः॥ वामजानो॥ ल० ध्या० ध्यायनमः॥ दक्षज०॥ वैयूव्या० ध्यायन

म॥ तामर्ज्या ॥ वंसं हंड रुद्राय नमः ॥ दक्षाय ॥ मूं मूं ८ लं कं वरुणे नमः ॥ वामया ॥
 ॥ वृत्तिन कृष्णाय ॥ ॥ यागिनी न्यास ॥ मूं १७ वृत्ति क्रांति नमः ॥ जित ॥ कं अं मा रुद्राय नमः
 ॥ वदन ॥ यं अं कोमार्थे नमः ॥ क ॥ ८ ॥ टं अं वेंकटाय नमः ॥ हृदय ॥ गं अं वा वा के नमः ॥ नारो ॥
 यं अं वेंकटाय नमः ॥ स्वाधिष्ठान ॥ यं ४ वामं पुत्राय नमः ॥ मूलाध ॥ गं ३ महा लक्ष्मी नमः ॥ या
 दया ॥ ८ ॥ वृत्ति यागिनी न्यास ॥ ॥ वागि न्यास ॥ मूं मूं वूं वूं श्री भवाय नमः ॥ दक्षाय ॥ ८ ॥
 मं वृषाय नमः ॥ मूलाध ॥ मूं ८ ॥ मिथुनाय नमः ॥ स्वाधिष्ठान ॥ वं कं कं टाय नमः ॥ ८ ॥

७३

व ॥ ८ ॥ ८ ॥ सिंहाय नमः ॥ दक्षाय ॥ मूं मूं ८ ॥ अं अं कन्याय नमः ॥ दक्षाय ॥ कं अं कुलाय नमः ॥ वं
 मजित ॥ यं अं विष्णुयान नमः ॥ वामं रुद्र ॥ टं अं धनूय नमः ॥ क ॥ ८ ॥ गं अं मकराय नमः ॥ नारो
 यं अं कृष्णाय नमः ॥ मूलाध ॥ यं मीनाय नमः ॥ वामया ॥ वृत्ति यागि न्यास ॥ ॥ मूं मूं
 १७ ॥ स्वाधाय ॥ विष्णुयान किरां नमः ॥ कं १२ वं कंधाय ॥ नृनाह नवाकि ॥ ८ ॥ ८ ॥ १०
 मां संधाय ॥ मजिपूय कलाकि ॥ ८ ॥ वं ८ ॥ ८ ॥ मयधाय ॥ स्वाधिष्ठान काकि ॥ ८ ॥ वं ८ ॥ ८ ॥
 सिंहाय ॥ मूलाध ॥ ८ ॥ ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥ मं ८ ॥

वीरूदात्मगकि ४ श्रीयादूकां ३॥ आ धात्र ॥ ॐ श्रीसूर्यवक्रश्रीजालधलया ॥ श्रीवशीगंधात्मि
 कश्रीवक्रश्वनीदवीविष्णुत्मगकि श्रीयादू कु कां ॥ द्वाद ॥ १ श्रीसामवक्रश्रीपूर्वगित्रीया ॥
 श्रीडाहिगनाधामिकश्रीरुगमालिनीदवी श्रीवक्रात्मग ३ कि ४ श्रीयादूकां ॥ ॐ मत्स्य
 ॥ ८ क ३ रु ३ स ४ वक्रवक्रडाठियानया ॥ श्रीचर्यामाथात्मिकश्रीमहागियूत्रसूचनीदवी
 यनवक्रात्मगकि ४ श्रीयादूकां ४॥ वक्रवक्र ॥ ॐ निव ४ ४ यी ० न्यास ४॥ ॥ ॐ श्रीआत्मगलया
 यिकायेगियूत्राय नमः ॥ आ धात्र ॥ १ ॐ श्रीविद्यामलयाविकायेगियूत्राय ३ नमः ॥ द्वाद ॥

ॐ